रिक्शावाला काव्य

आशीर्वादक

महाकवि निराला

*

भूमिका लेखक

डॉ० राम कुमार वर्मा

*

यह विधि का कटुतम व्यंग्य भूमि के ऊपर,
दुख स्वयं दुखी होता है इसको छूकर।
सूरज दिन भर चलता है फिर सो जाता,
चंदा निशि-आधी निशि में ही खो जाता।

पर इसको क्या दिन रात इसे तो चलना,
रोटी के हित नित अंगारे सा जलना।
पर यह महान दे सकता बहुत उजाला,
साकार देवता श्रम का रिक्शावाला।

पर यह तारीफ—सहज मन को बहलाना,
ने पहिनाया इसे अश्व का बाना।

लेखक

विजय कुमार शर्मा एम० ए०

त्रिवेणी [illegible] ६ आने

प्रकाशक : शरद साहित्य-सदन, [illegible] (उत्तर प्रदेश)

* शिमला * देहरादून * इलाहाबाद * कलकत्ता